**डॉ० शैलेन्द्र मोहन मिश्र**

**सी० एम० जे० कॉलेज**

**दोनवारी हाट खुटौना**

**मो० न० 9546743796**

**Email-** [**mishrasm966@gmail.com**](mailto:mishrasm966@gmail.com)

**B. A. III**

**शब्द शक्ति**

**एकर उदाहरणार्थ ‘ गौ ‘कहला सँ गाय नामक प्राणीक तत्काल बोध होइत अछि | इएह शब्दक मुख्य शक्ति अछि | जीवनक सभ क्रियाकलाप मे इएह प्रचार अछि | संसारक कोनो वस्तु आ व्यापारमे सभसँ पहिने ओकर इएह अभिधार्थ ध्यान मे अबैत अछि | इएह अर्थ कोश सभमे सेहो देल जाइत छैक | सरलताक दृष्टिसँ सृष्टिक प्रारम्भसँ आइ धरि मनुष्य सभसँ पहिने शब्दक एहि अर्थकें विकसित कएलक अछि , एनी अर्थ बादमे ओकरे आधार पर लगाए देल गेल अछि वा कल्पित कएल गेल अछि |**

**अभिधाक महत काव्यमे की अछि , एहि प्रसंग भट्टलोल्लट कहैत छथि जे अभिधा शब्दक व्यापार वाणक सदृश दीर्घ – दीर्घतर होइत अछि – “ सोयअभिषोखिदीर्घ – दीर्घतरोअभिधा व्यापार: | “ एहि कथनक द्वारा अभिधावादी अभिधा शक्तिक असीम व्यापकता सिद्ध करैत छथि | भट्टनायक सेहो अभिधाक विशेष महत्व दैत छथि | हुनका अनुसार रसक अनुभूति कराबए मे अभिधा शक्तिये प्रधान अछि ओकरे द्वारा साधारणीकरण आ भोजकत्वक द्वारा रसास्वादन होइत अछि | अतएव अभिधा मुख्य शक्ति अछि| एतवय नहि निसंदिग्द्ध रुपसँ स्वीकार कएल जा सकैत अछि जे लक्षणा आ व्यंजनाक आधार अभिधा शक्तिए छैक |**

**अभिधा शक्तिसँ जाहि वाचक शब्दक अर्थ बोध होइत अछि ओ तीन प्रकारक होइत अछि – रूढ़ , यौगिक आ योगरूढ़ि |**

**रूढ़ :- रूढ़ि वा रूढ़ शब्द ओ अछि जकर व्युत्पत्ति नहि कएल जा सकैछ | ओ समुदायक रुपमे अर्थ प्रतीत कराबैत अछि | एतवय नहि ओ शब्द अखंड शक्तिसँ अर्थक द्योतन करैत अछि – “ व्युत्पत्ति रहिता: शब्दा: रुढ़ा अखण्डलाक्षय: | “ “ प्रकृति प्रत्यार्थमनपेक्ष्य शब्द बोध जनक शब्द: रूढ़ | “ एकर उदाहरण स्वरूप गाछ , राजा , घर , लोटा , घोड़ा आदिकें राखल जा सकैत अछि | एहि शब्द सभक व्युत्पत्ति नहि कएल जा सकैत अछि | एहिमे कोन ‘ प्रकृति ‘ आ कोन ‘ प्रत्यय ‘ अछि तकरो निर्णय नहि कएल जा सकैछ | उक्त शब्दकें खण्डित कएला सँ कोनो अर्थ नहि लागत , यथा – गाछ – गा + छ , राजा - रा + जा , घर – घ + र , लोटा – लो + टा , घोड़ा – घो + ड़ा | एहि सभ वर्ण एहिसँ कोनो अर्थ नहि लगैत अछि | उक्त व्यवहृत सभ शब्दक विखंडित रूप रहले सँ अर्थ लगैत अछि |**

**यौगिक :- यौगिक ओ शब्द अछि जकर व्युत्पत्ति भए सकए | एहि शब्दक अर्थ ओकर अवयव सँ ज्ञात होइत अछि , यथा भूपति , नरपति आदि भूपति शब्द भू + पति सँ बनल अछि | एतए ‘ भू ‘ क अर्थ पृथ्वी आ ‘ पति ‘ क अर्थ स्वामी | एहि दुनू कें मिलला सँ पृथ्वीक स्वामी अर्थ होइत अछि |**

**योगरूढि : - योगरूढ़ि शब्द ओ अछि जे यौगिक आ रूढ़ दुनू कें मिलाए कें बनैत अछि मुदा ओकर अर्थ रूढ़ होइत अछि | यद्यपि प्रकृति – प्रलयक अर्थ फराक – फराक निकलैत अछि | मुदा ओ एक अन्य विशिष्ट अर्थकें व्यक्त करैत अछि | एहिमे अवयव शक्ति आ समुदाय शक्ति दुनू ओतबए काज करैत अछि | उदाहरणक लेल ‘ पंकज ‘ शब्द लेल जा सकैत अछि | एकर व्युत्पत्ति कएला उत्तर ‘ पंक + ज ‘ रूप बनैत अछि | यौगिक अर्थ अछि पंक सँ जन्म लेमएवला | पंक ( कीचड़ ) सँ जन्म लेमएवला पदार्थ सभमे सेमार , घोंघा , सीप कमल आदि अछि मुदा ई शब्द मात्र ‘ कमल ‘ क अर्थमे रूढ़ भए गेल अछि|**

**2 लक्षणा : - शब्दक अर्थ अभिधा मात्रमे सीमित नहि रहि जाइत अछि | जखन मुख्यार्थ वा वाच्यार्थ मे बाधा होइत अछि , तखन रूढ़ि वा प्रयोजनक आधार पर दोसर अर्थ लगाएल जाइत अछि | ई अर्थ वक्ताक प्रयोगक आधार पर होइत अछि | ज वक्ताक आशय अभिधागम्य नहि होइत अछि त ओहिसँ सम्बद्ध दोसर अर्थ , लक्ष्यार्थ – लक्षणावृत्ति सँ ज्ञात होइत अछि – “ मुख्यार्थभिन्नाभिन्नार्थ सूचक: लक्ष्यार्थ | “**

**“ मुख्यार्थबाधे तद्योगे रूढ़ितोअथ प्रयोजनात लाक्षणिक अर्थकें व्यक्त करएबला शक्तिक नाम लक्षणा अछि | ओ शब्द लक्षक अछि , जाहिसँ ओ अर्थ निकलैत अछि | लक्षणाक स्वरूप आ परिभाषा जे आचार्य मम्मट निर्धारित कएलनि अछि से द्रष्टव्य थिक : -**

**“ मुख्यार्थबाधे तद्योगे रूढ़ितोअथ प्रयोजनात |**

**अन्योअर्थो लक्ष्यते यत सा लक्षणारोपितक्रिया || “**

**एकर आशय ई अछि जे मुख्य अर्थक ज्ञानमे बाधा भेला पर आ ओहि ( मुख्यार्थ ) क संग सम्बन्ध (योग) भेला पर प्रसिद्धि वा प्रयोजनवश एनी अर्थ जाहि शब्द शक्ति सँ विदित होइत अछि ओकरा लक्षणा कहल जाइत अछि | ( क्रमशः)**